प्रस्तावना

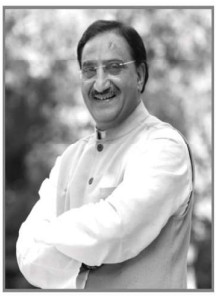

जनवरी 2010 की सर्द शाम को अमेरिका से आए अपने मित्र और नेनयाग बिजनेस स्कूल सिंगापुर से अपनी नई पारी के लिए शिकागो गए डॉ० कृष्ण ऐरापिल्ली से कुंभ 2010 के आयोजन पर चर्चा कर रहा था। बातों-बातों में मैंने उन्हें बताया कि किस प्रकार हम लोगों ने सबसे बड़े वैश्विक, आध्यात्मिक एवं धार्मिक पर्व कुंभ के सफलतापूर्वक आयोजन हेतु विभिन्न माध्यमों से सभी हितधारकों की भावनाओं को समाहित करते हुए विभिन्न रणनीतियों का सृजन और क्रियान्वयन सुनिश्चित किया तो उन्होंने कहा प्रबंधन की भाषा में हम इसे मुक्त नवाचार यानि ओपन इनोवेशन की संज्ञा दे सकते हैं।

उस दिन पहली बार मेरा इस शब्द से साक्षात्कार हुआ। मैं कभी भी प्रबंधन का छात्र नहीं रहा इसलिए तकनीकी शब्दावली से दूर हूँ। कई बार ऐसा होता है कि आप काफी कुछ स्वत: कर रहे होते है पर वैज्ञानिक, तकनीकी या फिर प्रबंधकीय दृष्टि से कौन-सा सिद्धांत, कौन-सी परिभाषा में समाहित होगा आपको पता नहीं रहता। उत्तराखण्ड में हम कुम्भ की तैयारियाँ कर रहे थे। संयोग से अमेरिका के राष्ट्रपति अपनी ओपन गवर्मेंट इनिशिएटिव के लिए सम्पूर्ण विश्व की प्रशंसा बटोर रहे थे। अमेरिकी प्रशासन ने सार्वजनिक सेवाओं की नवाचार गुणवत्ता बनाने हेतु सभी हितधारकों के साथ व्यापक विमर्श की प्रक्रिया शुरू की। सरकार के इन प्रयासों को न केवल सराहना मिली बल्कि अमेरिकी नेतृत्व की लोकप्रियता भी बढ़ी। सार्वजनिक जीवन में रहने के कारण मैंने इस बात को महसूस किया कि अभी भी हमारे बहुत से विद्यार्थी यहाँ तक कि अध्यापक और शैक्षिक जगत से जुड़े अन्य लोग नवाचार और आविष्कार के अंतर तक को पूरी तरह नहीं समझ पाए। शिक्षण में नवाचार युक्त वातावरण बनाने की शुरुआत हमें यहीं से करनी होगी । जिस दिन हम नवाचार का वृक्ष अपने शैक्षिक जगत में रोपित कर पाएँगे उसी दिन से परिवर्तन दिखने लगेगा। मेरा हमेशा से यह मानना रहा है कि गुणवत्तापरक और नवाचार युक्त शिक्षा भारत को वैश्विक महाशक्ति के रूप मे प्रक्षेपित करने की क्षमता रखती है। देश में शैक्षिक उन्नयन में सबसे बड़ी जिम्मेदारी हमारे शिक्षकों की है। अध्यापक के रूप में, मैं यह

महसूस करता हूँ कि अध्यापक के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती बच्चों को सीखने के लिए न केवल उत्साहित करना है बल्कि परिणाम आधारित अध्ययन के लिए एक उपयुक्त वातावरण तैयार करना है। एक ऐसा वातावरण जो बच्चों को प्रश्न पूछने के लिए उत्साहित करता हो, जो उन्हें त्रुटियों से सीखने का अवसर देता हो और जो उन्हें जोखिम उठाने के लिए प्रेरित करता हो। इन सब के लिए एक समर्पित दूरदर्शिता वाले दृष्टिकोण की आवश्यकता है। इसके अभाव में नवाचार मात्र एक शब्द बन कर रह जाएगा और हम शैक्षणिक जीवन में कई महत्वपूर्ण उपलब्धियों से रहित हो जाएंगे। प्रश्न यह उठता है कि वर्तमान तंत्र से पृथक हटकर हमें नवाचार परक विचारों की क्या आवश्यकता है और इसका उपयोग किस प्रकार किया जाए?

इस बात में कोई संशय नहीं है कि अध्यापक शैक्षिक व्यवस्था का स्तंभ है और विद्यार्थियों की अपेक्षाओं को अध्यापक से ज्यादा कोई नहीं समझ सकता है। विद्यार्थियों के मन-मस्तिष्क को पढ़ने, समझने का कौशल केवल हमारे अध्यापकों में है।

सभी शिक्षकों में नवाचार की संभावनाएँ मौजूद होती हैं, लेकिन औसत शिक्षक यह मानकर चलता है कि उसका काम पाठ्यक्रम पढ़ा देना और बच्चों को परीक्षा के लिए तैयार करना है। बच्चे की उत्सुकता का विकास करना शिक्षक की क्षमता को प्रदर्शित करता है। स्कूल में ऐसी परिस्थितियाँ विकसित करने की आवश्यकता है जहाँ बच्चे और अध्यापक अपनी जिम्मेदारी को बखूबी निभा सकें। जॉन डी० रॉकफेलर ने कहा है कि अच्छा प्रबंधन यह दिखाता है कि औसत लोगों से श्रेष्ठ लोगों का काम कैसे लिया जाए। हमें नवाचार के माध्यम से ऐसी प्रक्रिया का विकास करना है जिससे हर विद्यार्थी, हर अध्यापक अपना सर्वश्रेष्ठ दे सके।

हमें यह देखना है कि क्या हम आमतौर पर बच्चों की स्वाभाविक क्रियाएँ देखकर उन्हें समझने की कितनी कोशिश करते हैं? क्या यह देखने की कोशिश करते हैं कि बच्चे अपनी गतिविधियों से क्या सीख रहे हैं, यदि हम यह देख पाए तो निश्चय ही आनंददायी और रुचिकर शिक्षा दे सकते हैं। नवाचार अपने काम के प्रति रचनात्मक, जिम्मेवार, ठोस व व्यवहारिक दृष्टिकोण अपनाने का एक तरीका है। अधिकांश शिक्षकों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली शिक्षण पद्धतियों में विद्यार्थियों के लिए कोई चुनौती नहीं होती। ऐसे सवाल, ऐसे शोध व खोज नवाचार के माध्यम से ढूँढ़ने की आवश्यकता है।

अधिकतम कक्षाओं मे पठन-पाठन का अर्थ है जानकारी का हस्तांतरण न कि प्रयोग, अनुसंधान या अवलोकन। यद्यपि शिक्षकों के पास उनके जीवंत अनुभव होते हैं जिन्हें यदि वे चाहें तो शैक्षिक चिंतन में प्रयोग कर शिक्षा को रुचिकर और सरस बना सकते हैं।

चाहे विज्ञान हो गणित हो या फिर व्याकरण, सभी में, बुनियादी नियम और सिद्धांत सिखाने पर जोर होना चाहिए। यह जरूरी नहीं कि बच्चे शुरू में ही सब समझ जाए, ऐसे अवसरों पर नवाचारों की जरूरत है, जिनमें सवाल हल करने के लिए दबाव और डर के बिना स्वाभाविक

तौर पर सीखने के मौके हों। कक्षा में ऐसी गतिविधियाँ हों जिनसे बच्चों को रोचकता का एहसास हो, जिनमें कुछ सोचना, समझना और समझाना पड़े। आधुनिक शिक्षण में प्रयोग और प्रत्यक्ष, व्यवहारिक अनुभव अधिक उपयोगी और स्थाई होते हैं। इन अनुभवों का विविध परिस्थितियों में स्थानांतरण भी किया जा सकता है ।

हमारे अध्यापकों को समझना होगा कि विकास और सुधार की कोई सीमा नहीं होती इसलिए शिक्षक को मालूम होना चाहिए कि नवाचार एक सीढ़ी होती है, जिस पर चढ़कर आगे के रास्ते खुद-ब-खुद मिलते हैं ।

एक बात और ध्यान देने योग्य है कि नवाचार अधपके न हों, नवाचार सैद्धांतिक अध्ययन से उभरे हों, जो व्यवहार में प्रचलित परम्पराओं से भी जुड़े हो सकें और जिनके द्वारा पढ़ाने के तरीकों में विविधता लाई जा सके।

यह स्पष्ट है कि नवाचार से पुनरुत्थान तभी संभव है जब उसे अध्ययन, प्रयोग, लेखन, सृजन आदि में आत्मीय रूप से जोड़ा जाए। उसके लिए अकादमिक अवसर दिए जाएं एवं प्रारम्भिक स्तर पर प्रोत्साहन दिया जाये। यदि शिक्षा का अर्थ बालक का सर्वांगीण विकास है, तो शिक्षक के प्रत्येक नवाचार में बच्चे की सहभागिता आवश्यक है। यह भी जरूरी है कि शिक्षक अपने आचरण व चरित्र में ऐसा परिवर्तन लाए जिससे वह अपने पद को वेतन भोगी पद नहीं बल्कि स्वयं को साधना और सृजन से जोड़ दे।

बच्चों की अल्पकालिक एवं दीर्घकालिक समस्याओं को हल करने की कुंजी अध्यापकों के पास है। अध्यापकों से मेरा आशय उस सम्पूर्ण तंत्र से है जिसमें हमारे उत्साही अध्यापक, प्राचार्य एवं प्रशासनकर्मी शैक्षिक जगत में सकारात्मक भूमिका निभाते हैं। सबके बीच मुक्त नवाचार, आंतरिक और बाहरी विचारों को साथ जोड़कर प्रौद्योगिकी का विकास करना ओपेन इनोवेशन कहलाता है। परंतु अभी हम सहयोग के लाभ को पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं।

कुछ इसी तरह हमने मुक्त नवाचार का एक अत्यंत सफल प्रयोग किया। औरोबिंदों आश्रम के साथ हमने संपूर्ण देश में एक मुक्त नवाचार से प्रेरित वृहद् अभियान किया जिसमें हमने 17 लाख अध्यापकों को नवाचार के लिए प्रेरित किया। हमें उनके 8.5 लाख सुझाव प्राप्त हुए। इनमें से सात लाख सुझावों को हमने क्रियान्वित किया। सबसे अच्छी बात यह हुई कि मुक्त नवाचार को अपनी शिक्षा प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग मान कर यह सब लोग अत्यंत आत्मविश्वास के साथ अपने कर्तव्यों का उत्कृष्ट पालन कर रहे हैं।

अभी कुछ दिन पूर्व मुझे नंदन निलेकनी से मिलने का मौका मिला। मुझे लगता है उनके द्वारा दिया गया लेवल प्लेयिंग फील्ड का विचार आज के परिपेक्ष्य में अत्यंत आवश्यक है। विशेषकर भारत जैसे देश के लिए, जहाँ हम विश्व की 18 प्रतिशत मानवता के जीवन में सामाजिक, आर्थिक क्रांति लाना चाहते है, जहाँ हम ज्ञान आधारित समाज की कल्पना करते हैं,

जहाँ हम विज्ञान और प्रौद्योगिकी के शीर्ष पर भी पहुँचना चाहते है साथ ही अपने मूल्यों की रक्षा करना चाहते हैं। साथ ही हम आज जनसांख्यिकी लाभांश की बात भी करते हैं पर ये सब शोधपरक नवाचार युक्त वातावरण में ही संभव होगा। हमारे समक्ष यह बड़ी चुनौती होगी कि हम अपने युवावर्ग को एक सार्थक दिशा की तरफ प्रेरित कर सकें।

वैश्विकता के इस दौर में हमें थिंक ग्लोबली एक्ट लोकली के विचार को आगे बढ़ाते हुए अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा से मुकाबला करना है। हमें सहयोग का एक ऐसा सक्षम तंत्र स्थापित करना है जो विविधता से परिपूर्ण हो, सृजनात्मकता को बढ़ावा देता हो और परस्पर मेल जोल से एक दूसरे के उत्थान के लिए संकल्पित हो। प्रौद्योगिकी ने हमारी दुनिया को छोटा और तेज बना दिया है। आज बड़े पैमाने पर सूचना क्रांति के प्रभाव देखे जा रहे हैं । शिक्षा से जुड़े संस्थानों के लिए चुनौती यह है कि वह प्रौद्योगिकी का सदुपयोग सुनिश्चित करें।

चाहे वह एक नया विचार हो, एक नया उत्पाद हो या एक नई प्रक्रिया हो, नवप्रवर्तन कई रूप ले सकता है और किसी भी संस्था के विकास एवं वृद्धि के लिए एक महत्वपूर्ण ईंधन है। कहा गया है कि सतत नवाचार की प्रक्रिया बनाये रखना कठिन है। इसकी तुलना उस विमान से की गई है जिसे उड़ान में रखना है और इसके पंख और पहियों को उन्नत किया जा रहा है। एक शैक्षणिक संस्थान को नवाचार, अनुसंधान और विकास को अंजाम देना मुश्किल हो सकता है जब वह अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में व्यस्त हो। यहाँ पर मैं कहना चाहता हूँ कि नवाचार करने के लिए केवल अपनी ही ताकत और संसाधनों पर निर्भर रहने के बजाय, संगठनों को सफलता के लिए बाहरी सहयोगियों के साथ साझेदारी करने की आवश्यकता है। खुले नवाचार (ओ आई) का अभ्यास करना अत्यंत आवश्यक है। हेनरी चेसब्रॉ, जिन्होंने 2003 में ओ आई शब्द गढ़ा था, इसे संक्षिप्त रूप से परिभाषित किया था–आंतरिक नवाचार में तेजी लाने के लिए उद्देश्यपूर्ण प्रवाह और ज्ञान के बहिर्वाह का उपयोग और क्रमशः नवाचार के बाहरी उपयोग के लिए बाजारों का विस्तार।

विद्यार्थियों की बदलती माँगों के साथ-साथ, आस-पास के क्षेत्रों में उभरते नवाचारों से तालमेल न केवल प्रासंगिक बने रहने की संभावनाओं को बढ़ाते हैं, बल्कि संसाधनों के समुचित उपयोग की राह प्रशस्त करते हैं। भारत को महाशक्ति के रूप में विकसित करने में नवाचार की महत्वपूर्ण भूमिका होगी और नवाचार को जन-जन तक ले जाने की महत्वपूर्ण भूमिका हमारे शिक्षकों की है। जितनी जल्दी हम यह नवाचार रुपी मंत्र समझ पाएँ, उतनी जल्दी हम शैक्षिक उत्कृष्टता को प्राप्त कर सकते हैं।

रमेश पोखरियाल 'निशंक'
मंत्री
मानव संसाधन विकास, भारत सरकार